''अहं द्वारस्वरूपः मया यः प्रविशति, स त्राणं लप्स्यते''
(द्वार मैं हूँ, यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो मोक्ष पायेगा)

पापमोचन

Papmochan

शिष्य थॉमसन

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

ije'oj dk ng/kkj.k
iHk ;h'k d Lo:i e

(;gUuk 1)

ikjHk e opu Fkk] vkj opu ije'oj d lkFk Fkk] vkj opu ije'oj FkkA og ikjHk e ije'oj d lkFk FkkA lc dN mlh d }kjk jpk x;k vkj tk dN vfLrRo e g] ml e l dkb Hkh oLr mld fcuk vfLrRo e ugh vkbA

ml e thou Fkk(vkj og thou eu";k dh T;kfr FkkA vkj T;kfr vUèkdkj e pedrh g(vkj vUèkdkj u ml xg.k ugh fd;kA lPph T;kfr tk gj ,d eu"; dk idkf'kr djrh g] llkj e vkuokyh FkhA

;h'k txr e Fk] vkj txr mud }kjk mRi™k gvk] ij txr u mUg ugh ifgpkukA

;h'k viu ?kj vk;; vkj mud viuk u mUg xg.k ugh fd;kA ijUr ftruk u mUg xg.k fd;k] mudk mUgku ije'oj dh lUrku gku dk vfèkdkj fn;k] vFkkr mUg tk ;h'k d uke ij fo'okl j[kr gA o u rk ykg l] u 'kjhj dh bPNk l] u eu"; dh bPNk l] ijUr ije'oj l mRi™k g, gA

स्वागत

मनुष्य ईश्वर की खोज क्यों करता है? हर मनुष्य के पास एक धर्म क्यों है? वह धर्म में ईश्वर की खोज करता है। मनुष्य का विवेक उसे हमेशा सही और गलत के बीच चेतावनी देता रहता है। एक ऐसा आभास, कि जीवन में सब कुछ ठीक नहीं है। जैसे शरीर की बीमारी अनुभव की जा सकती है। और डॉक्टर या दवा की खोज की जाती है। उसी प्रकार हमारा विवेक एक आत्मिक बीमारी का अनुभव करता है। और उसे तलाश है, उसकी जो सृष्टिकर्त्ता है। जिसने बनाया है, वही बचा सकता है, सुधार सकता है। लेकिन परमेश्वर और मनुष्य के बीच में पाप की खाई है, जिसका समाधान होना है। हम सृष्टि हैं, असमर्थ हैं, इसलिये परमेश्वर के पास चलें, उससे प्रार्थना करें कि वो पाप रूपी बीमारी से छुटकारा दे, और तब सवाल आता है, पापमोचन का, पापों से छुटकारे, क्षमादान या पवित्रता का।

आइये इन बातों की इस छोटी सी पुस्तक में समझने की कोशिश करते हैं।

पापमोचन

बाइबल का एक वचन इस प्रकार है।
पापस्य वेतनं मरणं किन्तव अस्माकं प्रभुणा यीशु ख्रीष्टे
अनंत जीवनम् ईश्वर दत्तं दानम् आस्ते।
(पाप की मज़दूरी मृत्यु है किंतु हमारे प्रभु यीशु में "मोक्ष" परम ईश्वर का वरदान है। बाइबलः रोमि. 6: 23)

पाप की मज़दूरी

मनुष्य मोक्ष की तलाश में है। वो ढूँढ़ता है, दूर दूर यात्रा करता है।

पहले तो ईश्वर को खोजा जाये, और फिर उससे मोक्ष मार्ग पूछें, और उसे प्राप्त करें। हर धर्म मोक्ष की आवश्यकता बताता है। मनुष्य के अंतःकरण की आवाज़ उसे आनेवाले कल के बारे में आगाह करती रहती है। मनुष्य संसार में आया है और शरीर और संसार उसकी आखिरी मंज़िल नहीं है। आत्मा यहाँ से निकलकर आगे जायेगी और मिट्टी के तत्त्वों से बना ये शरीर, मिट्टी में मिल जायेगा यह तो सभी जानते हैं, तो फिर मुक्ति, उद्धार, मोक्ष तो हर व्यक्ति की ज़रूरत है। अग्निवास कहें या अनंत नरक कहें उसमें तो आत्मा की पीड़ा को कोई नहीं चाहता है, इसलिये आने वाले कल से भयभीत होकर, हर व्यक्ति मोक्ष की कीमत चुकाने की कोशिश करता है, और पापमोचन चाहता है।

तो क्या हो कीमत, पापमोचन की

अपनी छोटी सी नज़र और अल्पबुद्धि का प्रयोग कर, हम अधिकाँश मनुष्यों को देखते हैं कि वो एक कीमत देने का विचार करते हैं। पापमोचन के लिये कष्ट भोग करते हैं। कर्मदान चढ़ाते हैं। ज्ञान और दर्शन में खोजते हैं। धार्मिक स्थलों में भटकते रहते हैं और कीमत पूछते हैं। जगह-जगह जाकर पूछते हैं कि क्या किया जाये? कैसे मोक्ष मिलेगा? क्या चढ़ाना पड़ेगा? क्या देना पड़ेगा? और फिर अपने साधन, या जेब टटोलते रहते हैं। देखते हैं, कि हम कुछ कर सकते हैं या नहीं, पापमोचन पायेंगे या नहीं इत्यादि। धनी मनुष्य अधिक धन देकर पापमोचन की संतुष्टि चाहता है। वह सोचता है, ''हमारे पास बहुत सोना चाँदी है, पैसा है, जमीन है, घर-बार है, तो हमारे लिये आसान होगा।'' जो गरीब है, वो धन न होने पर कर्मदान करने की कोशिश करता है। हर धर्म का व्यक्ति तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ता है। कहीं दूर जायेगा, पैदल चलेगा, कभी बिना चप्पल के चलेगा, काँटों पर चलने का प्रयास करता है या श्रमदान देने की कोशिश करता है।

और धर्म के व्यापारी जो हैं। वो मोक्ष का सौदा कराने में बिचवई का काम करते हैं। दुखी, गरीब, हताश, निराश, मोक्ष खोजी जाल में फंस जाते हैं, हम जानते ही हैं कैसे लोगों को लूटा जाता है। पापमोचन के असफल प्रयास में धन लुट जाता है, श्रम थका देता है, और एक झूठी सुरक्षा पाकर मनुष्य घर आ जाता है।

धन-संपत्ति दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती है। हम इसको समझने का प्रयास करें।

क्या हम ईश्वर को कुछ दे सकते हैं

क्या सोचते हैं, आप क्या ये संभव है? स्वर्गधाम और सर्व ब्रह्मांड

को बनानेवाला जो स्वयं ईश्वर है, जिसने सृष्टि बनाई है, और मनुष्य की रचना भी की है, वो तो सर्वसृष्टि का मालिक है और यदि हम कुछ सृष्टि से निकालकर कीमत के रूप में दें, तो वह न दान है, न दक्षिणा है, और न कीमत है, क्योंकि वो सब कुछ पहिले ही से परमेश्वर का है, हमारी धन संपत्ति हम ने ईश्वर से प्राप्त की है, तो हम क्या दान दें? हम क्या कीमत दें? ब्रह्मांड को देख लीजिये, यदि आप ब्रह्मांड को देखेंगे, तो अपने आप को और भी कमज़ोर पायेंगे, कंगाल पायेंगे, अपनी निर्बलता को देखने पायेंगे, मैं आपको इसकी तस्वीर और साफ दिखाता हूँ।

ब्रह्मांड और हम

इस ब्रह्मांड में हमारी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है, हमारा अपना सूर्य हमारी धरती से दस लाख गुना बड़ा है। हमारे सूर्य से लाखों गुना बड़े सूर्य और भी हैं, जो नक्षत्र या सितारे कहलाते हैं। करोड़ों सूर्यों के झुंड को गेलेक्सी या आकाशगंगा कहते हैं। और इस तरह की करोड़ों गेलेक्सियाँ हम शक्तिशाली टेलिस्कोप से देख सकते हैं। हमारी एक गेलेक्सी 'मिल्की वे' को लें, उसके एक छोर से दूसरे छोर तक 300,000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड की गति से जायें, जो की प्रकाश की गति है, तो उस रफ्तार से हमें एक लाख वर्ष लगेंगे अंदाज लगाने के लिये इन करोड़ों गेलेक्सियों में से यदि आप एक गेलेक्सी की यात्रा पर 300,000 किमी/सेंक. की गति से निकलें तो आपको एक करोड़ वर्ष लगेंगे

लगता है न भीमकाय ब्रह्मांड? इस भीमकाय ब्रह्माड में आप क्या सोच रहे हैं, आप कितने बड़े हैं? इस भीमकाय ब्रह्मांड को जिसे एक जीवित परमेश्वर ने बनाया है, उसकी तुलना में हमारी ये एक पृथ्वी एक धूल के कण के समान है।

और यदि इस धूल के तिनके को एक शक्तिशाली माइक्रोस्कोप के नीचे देखें, तो इस तुलना में, हम मनुष्य, एक जीवाणु के समान घूमते हुए रेंगते हुए दिखेंगे।

अब सवाल ये है, कि ये छोटा सा प्राणी जिसे हम मनुष्य कहते हैं, ये एक छोटे जीवाणु की तरह है, और वह अपने घमंड और गर्व से इस असीमित सृष्टि के बनाने वाले कर्त्ता परमेश्वर को अपने मोक्ष के लिये कुछ भौतिक वस्तु प्रयास या श्रम कीमत के रूप में देना चाहता है। उस ईश्वर को क्या इसकी ज़रूरत है? क्या वो जो ब्रह्मांड का रचनेवाला है, आपसे कुछ पैसा चाहता है? रुपया चाहता है, क्या वो खुश हो सकता है? इस को समझने के लिए एक उदाहरण लें।

कल्पना कीजिए कि एक बहुत धनी राजा है जिसके पास करोड़ों टन सोना है, हीरे जवाहरात हैं और इस राजा को एक अपराधी नागरिक जिसको जेल हुई है, जिसने कत्ल किया है, वो इस धनी राजा को एक रुपया देकर खुश करना चाहता है। क्या सोचते हैं आप, वो राजा खुश होगा? यदि कातिल कहे कि महाराज आप एक रुपया ले लीजिए और मुझे छोड़ दीजिए, तो क्या राजा के लिए एक रुपये की कोई कीमत होगी? अपने अधर्म की कीमत के रूप में यदि कुछ देना भी चाहें तो उसका कोई फायदा नहीं है, वो कबूल नहीं होगा। क्या इस तरह से मुक्ति की आशा है? आप अवश्य समझ गये होंगे कि ये मूर्खतापूर्ण कार्य है, और निरर्थक उपाय है, आप धन की सहायता से, पैसों की सहायता से ईश्वर के पास नहीं जा सकते, और ईश्वर को खुश नहीं कर सकते।

पाप का स्वरूप

प्रेम करने वाला परमेश्वर जीवित सृष्टिकर्त्ता है, उनसे मिलन पापमोचन, संकटमोचन और आत्मा के मोक्ष के लिए हमें कोई भौतिक वस्तु, दान पुण्य या धन देने की आवश्यकता नहीं है। बहुत लोग हैं,

जो सोचते हैं, हम कुछ कर्म करके परमेश्वर को खुश या प्रसन्न कर देंगे, मात्र अच्छे कर्म से मोक्ष क्यों हासिल नहीं होता है? वो इसलिए की पाप केवल कर्म ही से नहीं होता है, पर हमारे विचारों में, उद्देश्यों में बीज के रूप में छिपा हुआ रहता है। हमारे मन और हृदय में बसा रहता है। हत्या, पाप का बाहरी फल है। पर इसका छिपा बीज क्रोध है। व्यभिचार फल है, पर बीज वासना है। जो हृदय के अंदर गंदे विचार के रूप में भरा रहता है। चोरी पाप का बाहरी फल है, और इसका बीज लालच के रूप में हृदय में बसा होता है। तो इससे यह समझ में आता है, कि फल रूपी कर्मों के सुधार से या निवारण से पाप का छिपा हुआ बीज जो हमारे अंदर हृदय में है, मन में है, वह नहीं निकलता है।

पापमय विचार और उद्देश्य हमारे अंदर हमें पापी साबित करते रहते हैं। इसलिए बिना ईश्वर की सहायता से अच्छे कर्म करके अपनी कोशिश या गर्व से मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास, एक गंदे बरतन का बस बाहर से साफ करके इस्तेमाल करना है। ये रास्ता सही नहीं है ये अंदर की बीमारी का बाहरी इलाज है। ऊपर से तो हम अपने धर्म के चाहे वो कोई भी धर्म क्यों न हो, बड़े भक्त लगते हैं। अच्छे दिखाई देते हैं, पर हमारे अंदर झूठ है। अधर्म, क्रोध, लालच ये सारे पाप भरे हुए हैं। ये हमारी बाहरी आंखों से तो दिखाई नहीं देते हैं पर परमेश्वर की नज़र में हैं। आप पापमोचन के खोजी हैं पर हर जगह धोखा है, आप जाते हैं ढूंढ़ने कि कैसे मोक्ष मिले, पर लोग अलग-अलग बात बताते हैं। और आप परेशान होते रहेंगे, सत्य को नहीं जानेंगे, और असत्य को लोग सत्य साबित करते रहेंगे।

धोखा

तो क्या-क्या धोखे हैं जिससे आपको बहकाया जाता है, भटकाया जाता है।

पहला धोखा, ये कि लोग मनुष्य को ईश्वर समझते हैं। मनुष्य एक पापी है और बीमार पापी इन्सान जो मृत्यु से हारा हुआ है। और स्वयं एक सृष्टि है। क्या परमेश्वर या सृष्टिकर्त्ता की समानता कर सकता है? क्या परमेश्वर के स्थान पर हम उसकी भक्ति कर सकते हैं? क्या हम उसके पाँव पर गिर सकते हैं? क्या उसकी उपासना कर सकते हैं? ये तो संभव नहीं है।

दूसरा धोखा, निर्जीव वस्तुओं को ईश्वर समझना है, एक निर्जीव वस्तु कभी भी एक बुद्धिमान प्राणी की सृष्टि नहीं कर सकती है। और क्या उसको ईश्वर का स्थान देकर उसकी आराधना हो सकती है? ये भी नामुमकिन है।

तीसरा धोखा, मनुष्य का दर्शन है, और संसार के गुरु हैं। लोग अपने-अपने गुरु बना लेते हैं। सोचते हैं कि वे सर्वज्ञानी हैं। मनुष्य का ज्ञान उसकी शिक्षा तक सीमित है। जितना उसे पढ़ाओगे, उतना वो शिक्षित हो जाता है, ज्ञान से कोई लाभ नहीं होता है, ज्ञान एक सीमा पर आकर रुक जाता है। वो आत्मिक संसार और परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता है।

वो जिन्होंने ईश्वर को साक्षात् नहीं देखा है, क्या उनकी कल्पनाओं की कोई कीमत है। लोग जो किताब पढ़ कर ज्ञानी बन जाते हैं, गुरु बन जाते हैं क्या उनकी शिक्षा से हम सनातन, सार्वकालिक ईश्वर को पहचान सकते हैं? यह तो संभव नहीं है।

चौथा धोखा है विज्ञान, बहुत लोग विज्ञान को सबसे ऊँचा सत्य

मानते हैं। इसके द्वारा हमारा ईश्वर तक पहुँचना तो दूर की बात है, पर ये ज्ञान मनुष्य को नास्तिक बना देता है। वे कहते हैं कि विज्ञान ही सब कुछ है और ईश्वर नहीं है। पर उनका निष्कर्ष इसके विपरीत होना चाहिये, क्योंकि जब विज्ञान जीवन के गहरे सत्य की खोज करता है, तो वह हमको एक महान् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की ओर जाने के लिए बाध्य करता है। क्योंकि हम जानते हैं, एक असीमित बुद्धि और ज्ञान से सृष्टि की रचना हुई है।

पाँचवां धोखा, शैतान या भूतप्रेतों को ईश्वर समझ बैठना है, जादू टोना, तंत्र-मंत्र जो शैतानी ताकत से अनुभव किये जाते हैं। उनका जो स्रोत है। वो परमेश्वर नहीं है। पवित्र ईश्वर नहीं है। हर चमत्कार के पीछे ईश्वर नहीं होता है। जिस तरह अच्छा और बुरा इस संसार में है, उसी तरह अच्छा और बुरा आत्मिक संसार में भी है। आत्मिक दुष्टता या भूतप्रेतों द्वारा किये गये काम की पहचान ये है, कि इसके द्वारा भय आता है, डर आता है। और खून का चढ़ावा होता है। और इस भक्ति के नतीजे में पवित्रता नहीं आती है, परन्तु बुराई और वासना आती है, तंत्र मंत्र के साथ बुरी बातें जुड़ी होती हैं। पैसा, खून, गंदगी और बुरे काम जुड़े रहते हैं। पवित्र ईश्वर और तंत्र-मंत्र का कोई रिश्ता नहीं है।

छठवां धोखा 'शक्ति' है। कई लोग शक्ति को बहुत मानते हैं। शक्ति ही सब कुछ है। उन्होंने परमेश्वर की शक्ति नहीं देखी है, छोटी मोटी शक्ति को देखकर समझते हैं यही सब कुछ है, यदि सूरज नहीं देखा है बस एक दीया ही देखा है, तो क्या दीया ही सब कुछ है? और उस दीये से बढ़कर कुछ भी नहीं है? इसी तरह बहुत से लोग 'शक्ति' को मानते हैं। उपासना करते हैं, जहाँ शक्ति होती है, वहाँ वे उसकी भक्ति करने लगते हैं। हर शक्तिशाली वस्तु परमेश्वर का स्वरूप है, ये विचार सही नहीं है। शक्ति को ईश्वर नहीं समझना चाहिये, परमेश्वर शक्तिमान नहीं सर्वशक्तिमान है।

और सातवां धोखा घमंड और स्वयं पर भरोसा है। बहुत मनुष्य हैं, जो गर्व करते हैं और उनमें अहं है। वे अपनी शक्ति पर भरोसा करते हैं। पर सत्य ये है कि हमारे भविष्य को सनातन परमेश्वर ही बना सकता है। हम शक्तिहीन हैं। दुर्बल शरीर से कुछ नहीं कर सकते, अपने आप पर घमंड एक धोखा है। यदि हम सोचें कि हम अपनी मुक्ति खुद ढूँढ़ लेंगे, मोक्ष खुद प्राप्त कर लेंगे, या हम अपने पापमोचन की कीमत खुद अदा कर लेंगे, तो इस सोच से कोई लाभ होने वाला नहीं है। इससे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।

खुशखबरी-मोक्ष मुफ़्त है।

अब आपको एक सच्चाई दिखाते हैं। इसे आप समझें और मानें, क्योंकि यही सत्य है। यही सबसे बड़ी खुशखबरी है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। और वो ये है, कि मोक्ष मुफ्त है। पर क्यों है मुफ्त? वह इसलिए कि स्वयं परमेश्वर ने हमारे मोक्ष की कीमत चुकाई है। परमेश्वर, मनुष्य देह धारण कर संसार में आये। और उन्होंने हमें परमेश्वर के सत्य, मार्ग, जीवन और परमेश्वर की इच्छा को हम पर प्रगट किया है। वो मृत्यु उठाते हैं। स्वयं का बलिदान देते हैं। अपने रक्त से पापमोचन की कीमत अदा करते हैं, और मृत्यु के बलिदान के तीसरे दिन स्वयं जीवित हो जाते हैं और चालीस दिन के बाद लोगों की भीड़ के देखते-देखते वे स्वर्ग की ओर चले जाते हैं। इस तरह प्रभु यीशु मार्ग सत्य और जीवन बनकर हमारे मोक्षदाता बनते हैं।

बाइबल में लिखा है, कि आदि में स्वयं प्रभु यीशु ने अपने वचन की शक्ति से सारी सृष्टि की रचना की थी। वे स्वयं सर्वशक्तिमान परम ईश्वर हैं। ईश्वर वही हो सकता है जो जीवित हो। ईश्वर उसे होना चाहिए जिसके शब्दों में शक्ति हो। ईश्वर उसे होना चाहिए जो शून्य से अपने वचन की शक्ति के द्वारा जीवन की सृष्टि करे। और यही

बात बाइबल में लिखी है, कि आदि में परमेश्वर था और परमेश्वर स्वयं सृष्टिकर्त्ता है। उसने शून्य से अपने वचन की शक्ति से जीवन बनाया, जीवन दान किया, और इस कारण वो परमेश्वर है। उसके वचन में शक्ति है। उसका वचन जीवित है।

मोक्ष की कीमत बस ईश्वर ही अदा कर सकते हैं, क्योकि मोक्ष की कीमत बस उन्हें ही मालूम है। और कीमत है एक पवित्र पावन बलिदान है। और पवित्र इसलिये कि परमेश्वर पवित्र है, और हम पापी हैं। एक चोर दूसरे चोर को नहीं बचा सकता है। एक अंधा दूसरे अंधे को राह नहीं दिखा सकता है। इसी तरह एक पापी दूसरे पापी की कीमत अदा नहीं कर सकता है। लेकिन एक पवित्र परमेश्वर अदा कर सकता है। परमेश्वर एक है, और समस्त मानव जाती को बचाने की उसकी एक योजना है। इसी कारण प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आते हैं। शरीर धारण करते हैं, और क्रूस की मृत्यु द्वारा पवित्र लहू बहाते हैं। सर्वसिद्ध बलिदान बनते हैं, और ईश्वर प्रेम द्वारा मनुष्य के पापमोचन की कीमत अदा होती है। परमेश्वर के हिसाब में मोक्ष की कीमत और पाप का दंड बराबर है। मनुष्य के लिये ये कीमत, ये दंड स्वयं परमेश्वर उठाते हैं। एक तराजू में मोक्ष रखिये और एक तरफ पाप का दंड रखिये, तो दोनों बराबर हो जायेंगे क्योंकि पाप की मज़दूरी या कीमत मौत है। यही बाइबल में लिखा है।

तो एक पापी मनुष्य की जान कौन बचाये उसे तो दंड भोगना है उसे तो नरक की अग्नि में जाना है, पाप पीछा नहीं छोड़ते हैं। ऐसे में प्रभु यीशु आते हैं वे पवित्र हैं और दंड स्वयं उठाकर हमारे पापमोचन की कीमत अदा करते हैं। और हमको मुक्त करते हैं। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति है जिसका बच्चा मरने वाला है और उसे बचाने के लिये एक प्रेमी पिता स्वयं अपना प्राणदान करता है। उसे बचाने के लिए अपनी

जान देता है, इसी तरह परम ईश्वर प्रभु यीशु है, वो सृष्टिकर्त्ता है जिसने हमें बनाया है, हमें पाप से बचाने के लिये, वो स्वयं प्राण देने के लिए आ जाता है।

मृत्यु की दवा

मृत्यु की दवा जीवन है। मृत्यु की दवा कोई ज्ञान या क्रिया करम नहीं है। समझिये कोई मर गया है, तो डॉक्टर को मत बुलाइये, उसे इंजेक्शन मत लगाइये, टेबलेट खिलाने की कोशिश न करिए क्योंकि मौत का इलाज बस जीवन है, इसी तरह हम और आप इंसान पाप के जहर से मर गये हैं। नाश होने के लिए हम नरक की अग्नि ज्वाला की ओर बढ़ रहे हैं। हमारा शरीर मिट्टी में मिल जायेगा और आत्मा नरक की ओर चली जायेगी। इस अंत से हमें बचाने के लिए, कीमत अदा करने के लिए, प्रभु यीशु आते हैं। और अपना पवित्र लहू क्रूस की बलिवेदी पर पापमोचन के लिए अर्पण करते हैं। और बुलाते हैं, ''मेरे पास आओ, मैं तुम्हें जीवन दूँगा, मुझसे माँगो मैं मोक्ष (उद्धार) दूँगा, मैं तुम्हारे पापों को क्षमा करूँगा, मैं जीवनदान करूँगा''।

प्रेम ही मुक्तिमार्ग निकालता है। प्रेम ही मोक्ष की कीमत निर्धारित करता है। परमेश्वर का प्रेम ही मोक्ष का दाम है, और ये मुफ्त है, और हमारे कर्म का प्रयास नहीं है। यह परमेश्वर का वरदान है। यही हमने परमेश्वर के वचन में पढ़ा है। आज प्रभु यीशु स्वर्ग लोक में विराजमान हैं। और मोक्ष मार्ग बनकर पापमोचन कर परम पिता से मिलन कराने को तैयार हैं।

क्या आप मोक्ष की इच्छा रखते हैं? क्या आप ईश्वर से मिलन चाहते हैं? यदि हाँ, तो कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है, यीशु कहते हैं मेरे पास आओ, मुझ पर विश्वास करो, भरोसा लाओ, बस एक प्रार्थना की दूरी है, आज आप प्रार्थना करके देखिये।

मुक्ति का सबूत

आप कहेंगे कि हम कैसे मानें कि ये सच है, मिलन हो गया, ईश्वर अब हम से प्रसन्न है? उसका जवाब बाइबल में लिखा है, कि जो कुछ भी आप यीशु नाम से माँगेंगे और सारे विश्वास से प्रार्थना करेंगे तो जवाब पायेंगे। चाहे वो कोई बीमारी हो, चाहे वो भूतप्रेतों का बंधन हो, चाहे पारिवारिक कलह य मानसिक अशांति हो, चाहे सामाजिक समस्या हो, कोई भी संकट क्यों न हो, तो यीशु नाम से प्रार्थना करके देखिये, तो आपको इसका जवाब अवश्य मिलेगा और तब आप जानेंगे की जीवन के दाता यीशु जीवित हैं और उन्होंने आपको स्वीकार किया है।

साथ ही आपका पुराना पापी, गंदा स्वभाव बदल जायेगा और एक नया पवित्र जीवन दिखाई देगा।

मोक्ष प्रार्थना आप कर सकते हैं।

परमेश्वर के वचन बाइबल में लिखा है, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया की उसने अपने प्रिय पुत्र यीशु को बलि दान स्वरूप दे दिया ताकि जो कोई उन पर विश्वास करे वो नरक के अग्निकुंड में नष्ट न हो, पर आत्मा का अनंत मोक्ष दान प्राप्त करे।'' (यूहन्ना 3:16)

पापमोचन की प्रार्थना

क्या आप पापमोचन की प्रार्थना करेंगे? तो प्रभु यीशु के पास आइये। यदि आप संसार की गंदगी और हर बुराई से निकलना चाहते हैं, डर, फरेब, धोखा, खून, बलिदान, लालच इन सबसे निकलकर पवित्र और निर्मल जीवन चाहते हैं? तो अभी इसी समय ये मोक्ष प्रार्थना दोहराइये ये प्रार्थना पूर्ण सच्चाई के साथ आत्मा में होकर कहें–

हे प्रभु यीशु, मैं पापी मनुष्य हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने मेरे पापों के लिये और मेरे पापमोचन के लिए कीमत, अपने पवित्र लहू से अदा की है। मेरे पापों को क्षमा करें, मुझे धो दें और अपनी आत्मा के द्वारा नया जीवन दें और पापमोचन कर मोक्ष प्रदान करें। मैं आप के ऊपर पूर्ण विश्वास करता हूँ। आमीन।

शिष्य थॉमसेन का परिचय

शिष्य थॉमसेन: शिष्य थॉमसेन का अधिकांश जीवन उत्तर भारत में बीता। स्वतंत्र रूप से सत्य की खोज करते हुए उन्होंने पाया कि सभी धर्म मनुष्य को मात्र एक नैतिक जीवन जीने तक ही प्रेरित करते हैं।

लेकिन इसके विपरीत मनुष्य की वास्तविक ज़रूरत कुछ नैतिक मूल्यों को जान लेना, और उनमें से कुछ पर अमल करना ही नहीं है। सत्य तो ये है कि यह जीवन हमारी आत्मा के लिए एक सनातन या अनंत आत्मिक जीवन का प्रारंभ है।

ईसाई धर्म का दिखावटी स्वरूप: सत्य की खोज ने उन्हें प्रभु यीशु मसीह के समक्ष ला खड़ा किया। लेकिन शीघ्र ही उन्होंने यह पहचान कि जो जीवन अधिकांश मसीहियों (ईसाईयों) का है, वो प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं पर न तो वास्तव में आधारित है और ना ही उनका जीवन मसीह के जीवन से मेल खाता है।

इसके समाधान के रूप में क्या किया जाये?

क्या यह कि जीवित परमेश्वर के सत्य, अर्थात् उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह का तिरस्कार कर दिया जाये, उसके रास्ते को विदेशी धर्म समझा जाये.....? कदापि नहीं।

शिष्य थॉमसेन ने इसे चुनौती के रूप में लिया, व ईसाई वर्ग की नकली भक्ति और कपट का पर्दाफाश करना चालू लिया।

उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वर्तमान मसीही विश्वास या धर्म का वह स्वरूप दिखाई नहीं दे रहा है, जो प्रभु यीशु मसीह के अनुयायियों का होना चाहिये। प्रभु यीशु मसीह पिता परमेश्वर के स्वर्गीय स्थान से मानव रूप धारण करके हमारे बीच आये थे। उन्होंने ईश्वरीय इच्छा से मानव जीवन बिताया, स्वर्गीय पिता परमेश्वर की इच्छा पूर्ण की, उन्होंने परमेश्वर, मनुष्य, जीवन, पाप व मोक्ष से संबंधित सत्य को हम पर प्रकट किया।

मनुष्य को ज्ञान हुआ कि किस तरह पाप मनुष्य के कर्म में नहीं पर हृदय में, विचारों में व उद्देश्यों में बीज के समान बसा रहता है। पाप के फलों को खत्म करने से लाभ नहीं होता, लेकिन जड़ को व बीज को निकालना ज़रूरी होता है।

नया धर्म नहीं: प्रभु यीशु मसीह नया धर्म चलाने नहीं, नया जीवन देने आये थे। उन्होंने बताया कि वे स्वयं ही जीवन, सत्य व मोक्ष के एकमात्र मार्ग हैं। क्योंकि केवल वे ही मनुष्य के पापों की कीमत अपने बलिदान से पूरा करते हैं। बाइबल कहती है, "मनुष्य के लिये पाप की मज़दूरी आत्मिक मृत्यु व सर्वनाश है।"

प्रभु यीशु मसीह मनुष्य को सनातन जीवन देने के लिये, स्वयं, क्रूस की मृत्यु सहते हैं और इसके चालीस दिन के पश्चात् लोगों के देखते-देखते उनका स्वर्गारोहण होता है।

धर्म परिवर्तन निरर्थक है: धर्म तो बाहरी दिखावा है, यदि अंत:करण में अधर्म है तब पैसे या धनशक्ति से, या सामाजिक दबावों से प्रेरित धर्म परिर्वतन झूठा है। ये जीवित परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है, हाँ यह मनुष्य को झूठा मानसिक संतोष दिलाने में समर्थ है, लेकिन आत्मा का मोक्ष व स्वर्गीय सनातन जीवन जो परमेश्वर के साथ संगती का है उसे प्रदान करने में पूरी तरह असफल है।

हमें धर्म परिवर्तन नहीं जीवन परिवर्तन चाहिये, वह जीवन जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को मुक्तिदाता स्वीकार करने से प्राप्त होता है, पापों के पश्चात्ताप करने से मिलता है। परमेश्वर प्रेरित नया जीवन मनुष्य अपनी सामर्थ से या अपने धर्म के नियमों का पालन करके या रीति-रिवाजों और त्यौहारों को मना कर नहीं प्राप्त कर सकता है।

साँसारिक शारीरिक जीवन पाप का स्त्रोत है इसलिये बाइबल बताती है कि जब प्रभु यीशु मसीह की आत्मा हमारे अंदर निवास करती है, और जीवन जीती है, तभी हम प्रभु यीशु मसीह के नये जीवन को संसार में प्रगट कर सकते हैं। दिखावे के मसीही (ईसाई) जीवन को चुनौती देते हुऐ, आज शिष्य थॉमसेन सच्चा मसीही जीने का आह्वान करते हैं।

SHISHYASHRAM
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-88 *e-mail:* jawabjawab@yahoo.com